

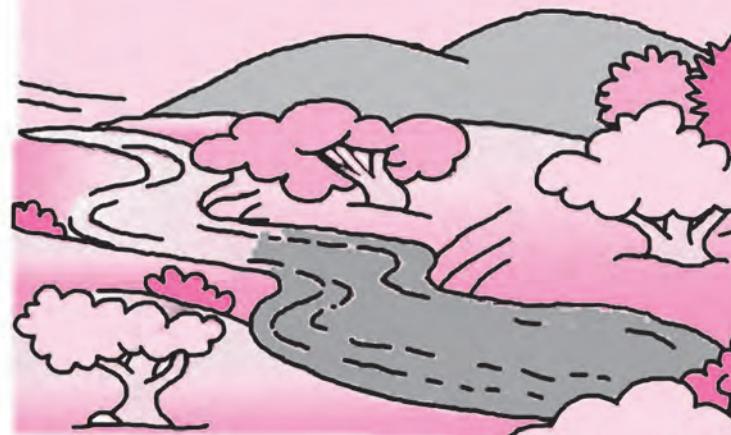
## ● सुनो और साभिनय गाओ :



झूम-झूमकर, नाच-नाचकर,  
कलियों संग इठलाती है ।

हलकी-फुलकी, नटखट, चंचल,  
सबके घर घुस जाती है ।

ठुमक-ठुमककर, मटक -मटककर,  
नदी-लहर संग बल खाती है ।



जंगल, पर्वत, खेत, गाँव में,  
गीत नए लिख जाती है ।

चिड़ियों के नन्हे बच्चों को,  
गोद लिए दुलराती है ।

सुबह-सवेरे, तड़के-तड़के,  
आकर हमें जगाती है ।

- केदारनाथ 'कोमल'



1. कविता में आए लयात्मक शब्दों को ढूँढ़कर सुनाओ ।

2. शब्दयुग्म सुनो, समझो और दोहराओ :

हलकी-फुलकी, तड़के-तड़के, घर-द्वार, नदी-नाले, खेत-खलिहान, गाँव-शहर, कली-वली ।



पूरी कविता उचित हाव-भाव, लय, गति, उच्चारण के साथ सुनाएँ । दो-दो पंक्तियाँ सुनाकर विद्यार्थियों से दोहराएँ । कविता का गुट एवं एकल रूप में पाठ करवाएँ और प्रश्नोत्तर द्वारा समझाएँ । पूर्व परिचित अन्य कविता विद्यार्थियों से कहलवाएँ ।